# CBSE Class 12 Hindi Elective 2012 - Set 29/1/1 Set2

## Question Paper

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

**Time Allowed: 3 Hours** **Maximum Marks: 100**

### General Instructions

(i) इस प्रश्न-पत्र में 14 प्रश्न हैं।
(ii) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्नों में दिए गए आंतरिक विकल्पों का पालन कीजिए।
(iii) दिए गए निर्देशों और शब्द-सीमाओं का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) यथासंभव सभी प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

## Section खंड क

**1.** निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

ज्ञान-राशि के संचित कोष ही का नाम साहित्य है। सब तरह के भावों को प्रकट करने की योग्यता रखने वाली और निर्दोष होने पर भी, यदि कोई भाषा अपना निज का साहित्य नहीं रखती तो वह, रूपवती भिखारिन की तरह, कदापि आदरणीय नहीं हो सकती। उसकी शोभा, उसकी श्रीसम्पन्नता, उसकी मान-मर्यादा उसके साहित्य पर ही अवलम्बित रहती है। जाति विशेष के उत्कर्षापकर्ष का, उसके उच्चनीच भावों का, उसके धार्मिक विचारों और सामाजिक संघटन का उसके ऐतिहासिक घटनाचक्रों और राजनैतिक स्थितियों का प्रतिबिंब देखने को यदि कहीं मिल सकता है तो उसके ग्रंथ-साहित्य ही में मिल सकता है। सामाजिक शक्ति या सजीवता, सामाजिक अशक्ति या निर्जीवता और सामाजिक सभ्यता तथा असभ्यता का निर्णायक एकमात्र साहित्य है। जातियों की क्षमता और सजीवता यदि कहीं प्रत्यक्ष देखने को मिल सकती है तो उसके साहित्य रूपी आईने में ही मिल सकती है। इस आईने के सामने जाते ही हमें यह तत्काल मालूम हो जाता है कि अमुक जाति की जीवनी शक्ति इस समय कितनी या कैसी है और भूतकाल में कितनी और कैसी थी। आप भोजन करना बंद कर दीजिए या कम कर दीजिए, आप का शरीर क्षीण हो जाएगा-और भविष्य-अचिरात् नाशोन्मुख होने लगेगा। इसी तरह आप साहित्य के रसास्वादन से अपने मस्तिष्क को वंचित कर दीजिए, वह निष्क्रिय होकर धीरे-धीरे किसी काम का न रह जाएगा। शरीर का खाद्य भोजन है और मस्तिष्क का खाद्य साहित्य है। यदि हम अपने मस्तिष्क को निष्क्रिय और कालांतर में निर्जीव-सा नहीं कर डालना चाहते, तो हमें साहित्य का सतत सेवन करना चाहिए और उसमें नवीनता और पौष्टिकता लाने के लिए उसका उत्पादन भी करते रहना चाहिए।

**1(क).** "सब तरह के भावों को प्रकट करने वाली..... आदरणीय नहीं हो सकती" — कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

**1(ख).** किसी भी जाति-विशेष का ग्रंथ-साहित्य उसकी किन-किन परिस्थितियों को दर्शाता है और क्यों ?

**1(ग).** 'साहित्य के सतत सेवन और उसके उत्पादन से' लेखक का क्या तात्पर्य है और यह क्यों ज़रूरी है ?

**1(घ).** साहित्य को 'आईना' क्यों कहा गया है ? विवेचन कीजिए।

**1(ङ).** "शरीर का खाद्य भोजन है और मस्तिष्क का खाद्य साहित्य है।" — लेखक के इस कथन से क्या तात्पर्य है ?

**1(च).** साहित्य के रसास्वादन से मस्तिष्क को वंचित करने का क्या परिणाम होने का अँदेशा है ?

**1(छ).** उपर्युक्त गद्यांश को एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

**1(ज).** विलोम शब्द लिखिए : क्षीण, उत्कर्ष।

**1(झ).** एक उपसर्ग और एक प्रत्यय अलग कीजिए : भोजनीय, अभाव, अवलम्बित, प्रतिबिम्ब।

**1(ञ).** वह निष्क्रिय होकर धीरे-धीरे किसी काम का न रह जाएगा। इस वाक्य को संयुक्त वाक्य रचना में बदलिए।

**2.** निम्नलिखित काव्यांश को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

अरे ! चाटते जूठे पत्ते जिस दिन देखा मैंने नर को उस दिन सोचा : क्यों न लगा दूँ आज आग इस दुनिया भर को ? यह भी सोचा : क्यों न टेंटुआ घोटा जाय स्वयं जगपति का ? जिसने अपने ही स्वरूप को रूप दिया इस घृणित विकृति का। जगपति कहाँ ? अरे, सदियों से वह तो हुआ राख की ढेरी; वरना समता-संस्थापन में लग जाती क्या इतनी देरी ? छोड़ आसरा अलखशक्ति का, रे नर, स्वयं जगत्पति तू है, तू यदि जूठे पत्ते चाटे, तो मुझ पर लानत है, थू है। ओ भिखमंगे, अरे पराजित, ओ मजलूम, अरे चिर दोहित, तू अखण्ड भंडार शक्ति का, जाग और निद्रा-सम्मोहित, प्राणों को तड़पाने वाली हुंकारों से जल-थल भर दे, अनाचार के अम्बारों में अपना ज्वलित पलीता भर दे। भूखा देख तुझे गर उमड़े आँसू नयनों में जग-जन के तो तू कह दे : नहीं चाहिए हमको रोने वाले जनखे; तेरी भूख, असंस्कृति तेरी, यदि न उभाड़ सके क्रोधानल, तो फिर समझूँगा कि हो गई सारी दुनिया कायर, निर्बल।

**2(क).** भूखे मनुष्य को जूठे पत्ते चाटते देख कर कवि के मन में क्या विचार उठा ?

**2(ख).** राख की ढेरी कौन हो गया है ? कवि ने ऐसा क्यों कहा है ?

**2(ग).** कवि शोषित-पराजित मनुष्य को क्या कहकर प्रेरित करता है ?

**2(घ).** आशय स्पष्ट कीजिए : 'अनाचार के अम्बारों में अपना ज्वलित पलीता भर दे।'

**2(ङ).** किन पंक्तियों का आशय है कि दलित-शोषित भारतीय को सहानुभूति के आँसू नहीं, व्यवस्था को बदलने वाले गुस्से की ज़रूरत है ?

OR

**2.** निर्मम कुम्हार की थापी से कितने रूपों में कुटी-पिटी, हर बार बिखेरी गई किंतु मिट्टी फिर भी तो नहीं मिटी। आशा में निश्छल पल जाए, छलना में पड़कर छल जाए, सूरज दमके तो तप जाए, रजनी ठुमके तो ढल जाए, यों तो बच्चों की गुड़िया-सी भोली मिट्टी की हस्ती क्या — आँधी आए तो उड़ जाए, पानी बरसे तो गल जाए, फसलें उगतीं, फसलें कटतीं लेकिन धरती चिर उर्वर है। सौ बार बने, सौ बार मिटे लेकिन मिट्टी अविनश्वर है। मिट्टी गल जाती पर उसका विश्वास अमर हो जाता है।

**2(क).** आशय स्पष्ट कीजिए — 'मिट्टी फिर भी तो नहीं मिटी'।

**2(ख).** मिट्टी को गुड़िया-सी भोली क्यों बताया गया है ?

**2(ग).** मिट्टी बार-बार बनने, सँवरने और मिटने पर भी कैसी बनी रहती है ?

**2(घ).** मिट्टी के बारे में कवि के दो कथन हैं — 'मिट्टी की हस्ती क्या' और 'मिट्टी अविनश्वर है।' इनमें से किसी एक पर अपना मत लिखिए।

**2(ङ).** इस कविता में निहित मूल भाव को स्पष्ट कीजिए।

## Section खंड ख

**3.** निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर लगभग 400 शब्दों में निबंध लिखिए : (क) समय अमूल्य धन है। (ख) राष्ट्र-हित सर्वोपरि है। (ग) जनसंख्या में स्त्रियों का घटता अनुपात। (घ) साम्प्रदायिकता : देश की प्रगति में बाधक (ङ) शिक्षक-शिष्य संबंध : आज के नज़रिए से

**4.** किसी दैनिक समाचार पत्र के संपादक के नाम पत्र लिखिए जिसमें खाद्य-पदार्थों में मिलावट रोकने के उपायों पर सुझाव दिए गए हों।

OR

**4.** कल्पना कीजिए कि आपने पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना अध्ययन पूरा कर लिया है और किसी प्रसिद्ध दैनिक समाचार पत्र में पत्रकार पद के लिए आवेदन पत्र भेजना है। इसके लिए स्व-वृत्त सहित आवेदन पत्र लिखिए।

**5.** फ़ीचर क्या है ? इसे लिखते हुए किन-किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए ?

OR

**5.** टी.वी. खबरें किन-किन चरणों से होकर दर्शकों के पास पहुँचती हैं ? उन पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

**6(क).** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : इंटरनेट पत्रकारिता आजकल बहुत लोकप्रिय क्यों है ?

**6(ख).** भारत में पहला छापाखाना कब और किस उद्देश्य से खोला गया था ?

**6(ग).** मुद्रित माध्यम से क्या तात्पर्य है ?

**6(घ).** समाचार लेखन के छह ककार कौन-कौन से हैं ?

**6(ङ).** खोजी रिपोर्ट से क्या तात्पर्य है ?

## Section खंड ग

**7.** निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : चकई निसि बिछुरै दिन मिला। हौं निसि बासर बिरह कोकिला ॥ रैनि अकेलि साथ नहिं सखी। कैसें जिऔं बिछोही पँखी ॥ बिरह सँचान भँवैं तन चाँड़ा। जीयत खाइ मुएँ नहिं छाँड़ा ॥ रकत ढरा माँसू गरा, हाड़ भए सब संख। धनि सारस होइ ररि मुई आइ समेटहु पंख ॥

OR

**7.** निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

धीरे-धीरे होने की सामूहिक लय दृढ़ता से बाँधे है समूचे शहर को इस तरह कि कुछ भी गिरता नहीं है कि हिलता नहीं है कुछ भी कि जो चीज़ जहाँ थी वहीं पर रखी है कि गंगा वहीं है कि वहीं पर बँधी है नाव कि वहीं पर रखी है तुलसीदास की खड़ाऊँ सैकड़ों बरस से।

**8.** निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) 'वसंत आया' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'राधौ ! एक बार फिर आवौ' पद के आधार पर कौशल्या की व्याकुलता का चित्रण कीजिए।

(ग) 'मैंने देखा एक बूँद' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

**9.** निम्नलिखित में से किन्हीं दो काव्यांशों का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

(क) सरस तामरस गर्भ विभा पर — नाच रही तरुशिखा मनोहर। छिटका जीवन हरियाली पर — मंगल कुंकुम सारा।

(ख) भर गया है ज़हर से संसार जैसे हार खाकर, देखते हैं लोग लोगों को, सही परिचय न पाकर, बुझ गई है लौ पृथा की, जल उठो फिर सींचने को।

(ग) श्री रघुनाथ-प्रताप की बात, तुम्हें दसकंठ न जानि परी। तेलनि तूलनि पूँछि जरी न जरी, जरी लंक जराय जरी ॥

**10.** निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : जिन रेखाओं और रंगों से कवि चित्र बनाता है, वे उसके चारों ओर यथार्थ जीवन में बिखरे होते हैं और चमकीले रंग और सुघर रूप ही नहीं, चित्र के पार्श्व भाग में काली छायाएँ भी वह यथार्थ जीवन से ही लेता है। राम के साथ वह रावण का चित्र न खींचे तो गुणवान, वीर्यवान, कृतज्ञ, दृढ़व्रत, चरित्रवान, दयावान, विद्वान, समर्थ और प्रिय-दर्शन नायक का चरित्र फीका हो जाए और वास्तव में उसके गुणों के प्रकाशित होने का अवसर ही न आए।

OR

**10.** निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

जहाँ बाहर का आदमी फटकता न था, वहाँ केंद्रीय और राज्य सरकारों के अफ़सरों, इंजीनियरों और विशेषज्ञों की कतार लग गई। जिस तरह ज़मीन पर पड़े शिकार को देखकर आकाश में गिद्धों और चीलों का झुंड मँडराने लगता है, वैसे ही सिंगरौली की घाटी और जंगलों पर ठेकेदारों, वन अधिकारियों और सरकारी कारिंदों का आक्रमण शुरू हुआ।

**11.** निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) संदेश भेजते समय बड़ी बहुरिया की तथा हरगोबिन की मनःस्थिति पर प्रकाश डालिए।

(ख) "कुटज में न विशेष सौंदर्य है, न सुगंध, फिर भी लेखक ने उसमें मानव के लिए एक संदेशा पाया है।" — इस कथन की पुष्टि करते हुए बताइए कि वह सन्देश क्या है ?

(ग) 'उसे भी मनोकामना का पीला-लाल धागा और उसमें पड़ी गिठार का मधुर स्मरण हो आया।' 'दूसरा देवदास' कहानी के आधार पर उपर्युक्त कथन पर टिप्पणी कीजिए।

**12.** विष्णु खरे अथवा केशवदास के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी किन्हीं दो प्रमुख काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

OR

**12.** भीष्म साहनी अथवा पंडित चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' के जीवन तथा रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली की दो प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

**13.** निम्नलिखित में से किन्हीं तीन के उत्तर दीजिए :

(क) 'अपना मालवा' पाठ के लेखक को यह क्यों लगता है कि हमारी आज की सभ्यता इन नदियों को गंदे पानी के नाले बना रही है ?

(ख) कोइयाँ किसे कहते हैं ? इसकी विशेषताएँ 'बिस्कोहर की माटी' पाठ के आधार पर बताइए।

(ग) 'आरोहण' कहानी में घर लौटते समय रूपसिंह को एक अजीब किस्म की लाज और झिझक क्यों घेरने लगी थी ?

(घ) भैरों ने सूरदास की झोंपड़ी क्यों जलाई ? उस घटना से उसके चरित्र का कौन सा रूप उभरता है ?

**14.** 'सूरदास की झोंपड़ी' कहानी के आधार पर सूरदास के चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

OR

**14.** 'पर्वतारोहण' कहानी के आधार पर पर्वतीय जीवन की कठिनाइयों पर प्रकाश डालिए।

**- End of Question Paper -**